श्रीमद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता

डॉ० मनोज कुमार मीणा
सहाचार्य, शिक्षापीठ
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय
संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–16

सारांशिका

प्रस्तुत पत्रक के अन्तर्गत मेरे द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता को प्रस्तुत किया गया है कि समाज के सभी वर्गों के लिये गीता में निहित मूल्य कैसे उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं तथा कैसे उनके द्वारा समाज को लाभान्वित किया जा सकता है। श्रीमद्भगवद्गीता जीवन के एक अंग के लिये महत्वपूर्ण नहीं हैं अपितु जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित कर उनमें अपना प्रभाव दिखाती है। इस विषय को अति संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करने का कार्य किया है।

अन्त में समाज के समस्त वर्गों के श्री मद्भगवद्गीता में निहित मूल्यों की सार्थकता पर बल दिया गया है जिससे समुदायों में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति नव चेतना रूपी जागृति का संचार किया जा सके, श्रीमद् भगवद्गीता में निहित मूल्यों की आधुनिक प्रासंगिकता क्या है इस बात को ध्यान में रखकर समस्त पक्षों पर बल दिया जा सके। इस पर विशेष ध्यान दिया गया है ।

मुख्य बिन्दु : श्रीमद्भगवद्गीता, मूल्य, सार्थकता, अनुभूति, संस्कृति।

प्रस्तावना

मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है। वह जो कुछ भी देखता–सुनता है ,उसी पर चिन्तन करने लगता है। चिन्तन करना, गहन स्तर पर विचार करना और सत्य को जानने का प्रयत्न करना ही मनुष्य की विशेषता है मात्र बुद्धि द्वारा चिन्तन के आधार पर ज्ञान, विज्ञान कला धर्म और संस्कृति की रचना की है, जो मानव–जाति की एक महत्त्वपूर्ण निधि के रूप में जानी जाती है।

भारतीय ऋषियों ने प्रकृति की गोद में बैठकर, प्राकृतिक सौन्दर्य से रसविभोर होकर, केवल बुद्धि के सहारे चिन्तन ही नहीं किया, बल्कि अपने भीतर की गहराई में जाकर और बुद्धि से परे जाकर, शाश्वत सत्य की अनुभूति की, उसे अन्तरात्मा की आँखों से देखकर, प्रत्यक्ष दर्शन किया। इतना ही नहीं महापुरूषों ने बुद्धि के द्वारा तर्क और कल्पना के सहारे असंख्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण चिन्तन भी किया है, किन्तु वैदिक ऋषियों ने तो शरीर, इन्द्रिय, मन और बुद्धि से परे जाकर किसी गहन स्तर पर सत्य की अनुभूति इस प्रकार की, जैसे उनको सत्य का जो साक्षात्कार वैदिक मंत्रों के रूप में परिलक्षित है।

श्रीमद्भगवद्गीता : संस्कृत साहित्य का अत्यंत लोकप्रिय महाकाव्य "श्रीमद्भगवदगीता" महाभारत–संज्ञक उस "पंचम वेद" का एक उपदेशात्मक भाग है, जिसके विषय मे विद्वन्मडली में प्रसिद्ध है–"अनन्तवेद महाभारत में सारूप में प्रकट हैं और स्वयं महाभारत का सर्वस्व भगवद्गीता के सात सौ श्लोकों में निहित है"।

कुरुक्षेत्र में हुये महाभारत युद्ध के प्रारंभ में प्रयोजन–विशेष से किये गये प्रवचन "श्रीमद्भगवदगीता" के उपदेशक स्वयं भगवान श्रीकृष्ण हैं। सृष्टि के आदि में उन्होंने इसका मूल रूप में उपदेश विवस्वान के प्रति किया था। तत्पश्चात् यह युग–युग में परम्परागत रीति से राजर्षियों को प्राप्त होता रहा। यह ज्ञान–विशेष द्वापर–युग में बहुत काल तक लुप्त रहा। इसको ही धर्म युद्ध से पराङमुख हुए किंकर्तव्य–विमूढ़ अर्जुन के प्रति पुनः उपदेश द्वारा योगबल से प्रकाश में लाने का कार्य षोंडश–कला संपन्न अवतार–विशेष योगराज श्रीकृष्ण ने सुसंपन्न किया और जन–साधारण को परमतत्त्व की प्राप्ति कराने के लिए इसका यथासमय संपादन सत्साहित्य के निर्माण व संकलन के कारण व्यासोपाधि से विभूषित भगवान् नारायण के ही अंशावतार महर्षि कृष्णद्वैपायन ने किया। इस ईश्वरीय वाणी भगवद्गीता में वेद, वेदांत और अन्य विविध शास्त्रों के मंथन से उद्भूत पीयूष का भारतम अंश निहित है।

''श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञान और भक्ति के भवन को कर्म की नींव पर खड़ा किया गया है, कर्म की जो परिसमाप्ति है, उस ज्ञान में कर्म को ऊपर उठाकर रखा गया है तथा कर्म का वर्णन उस भक्ति के द्वारा किया गया है, जो कर्म की प्राण हैं और जहाँ से कर्म उद्भूत होते है" ।

श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश विशेष के लिए नहीं है और न उसनें अपना कोई पृथक सम्प्रदाय ही स्थापित किया है। उसकी संपूर्ण उपासना–पद्धतियों के साथ सहानुभूति है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म–भावना की व्याख्या करने के लिए यह ग्रंथ सर्वथा उपयुक्त है। वस्तुतः यह भारतीय तत्त्वज्ञान के इतिहास में समय–समय पर हुए उन अनेक महान् समन्वयों में से एक है, जिसमें विश्व धर्म की व्याख्या की गई है–मानव धर्म का विश्लेषण किया गया है।

मूल्य : मूल्य "जो होना चाहिए" से संबंधित एक विचार का नाम है। यह हमारे विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रभावित करता है। मूल्य का व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था से बहुत गहरा संबंध है। मूल्य जीवन के उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करता है। हमारी सभी सामाजिक गतिविधियाँ मूल्यों से जुड़ी हुई हैं।

मूल्य हमेशा इस भावना से जुड़ा होता है कि समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि जो मानदंड समाज के लिए सर्वाधिक वांछनीय हैं, उन्हें मूल्य कहा जाता है।

जो हमें बताता है कि क्या सही है, क्या गलत है, क्या वांछनीय है, क्या अवांछनीय है, क्या अच्छा है, क्या बुरा है, उसे मूल्य कहते हैं। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखकर हम समाज में आचरण करते हैं। मूल्यों की प्रकृति अमूर्त है, मूल्य ही समाज के आदर्श हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में मूल्य : श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से मानव के शैक्षिक एवं व्यावहारिक जीवन को सर्वश्रेष्ठ पथ प्रदर्शिका बनाना ही आलेख का प्रमुख उद्देश्य है। मानव के जीवन को निर्देशन परामर्श के शाश्वत मूल्यों से सार्थक बनाया जाये। यदि जिज्ञासा निष्क्रियता से जन्मी है, तो उससे समाधान निकल पाना भी संभव नहीं होगा क्योंकि ज्ञान का उद्देश्य क्रिया के लिए तथा क्रिया के मध्य होना ही अभीष्ट है। अर्जुन और श्रीकृष्ण ये दोनों पक्ष हमारे भीतर उपस्थित है, अथवा इन्हें उपस्थित कराके जिज्ञासा और शोध द्वारा समाधान प्राप्त करने की प्रक्रिया ही ज्ञान की पीठिका है। सच्ची जिज्ञासा पैदा करो, और फिर इसके समाधान के लिए सभी प्रकार का प्रयास करो, तभी विकास संभव होगा। प्रयोगात्मक ज्ञान ही गीता का विज्ञान है, क्योंकि यह व्यावहारिक प्रयोग की कसौटी पर खरा उतर चुका है। ज्ञान की कसौटी कर्म है, क्योंकि कर्म का स्वरूप ग्रहण करने पर ही ज्ञान शक्ति बन जाता है। इच्छा, क्रिया और ज्ञान की युक्ति ही आनन्दवस्था की स्थिति है, जो गीता का लक्ष्य है।

शिक्षा एक उद्देश्य केन्द्रित प्रक्रिया है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा व्यक्ति की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यालिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सम्यता को पुनर्जीवित एवं पुनस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक शक्तिशाली साधन है। शिक्षा के द्वारा समाज आगामी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शो, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को हस्तान्तरित करता है जिससे मानव जाति के हृदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्जवलित हो जाती है।

शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत शिक्षण, अधिगम अध्यापन मूल्यांकन निर्देशन आदि निश्चित उद्देश्य होते है। शिक्षा मनुष्य के जीवन पर्यन्त चलने वाली सामाजिक प्रकिया है। व्यक्ति दूसरों के व्यवहारों से प्रभावित होकर अनुकरण करता है। इस परस्पर व्यवहार के व्यवस्थापन पर ही सामाजिक सम्बन्ध निर्भर करते हैं। इस पारस्परिक व्यवाहारिक सम्बन्धों में रूचियों, अभिवृत्तियों एवं आदतों आदि का विशेष महत्व है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है तथा निरन्तर विकास करने की शक्ति देता है। यदि शिक्षा की परिभाषा श्रीमद्भगवद्गीता के शाश्वत मूल्यों के संदर्भ में दी जाये तो शिक्षा वह है जो प्रत्येक व्यक्ति में निहित परमात्मा की अनुभूति कराने में सहायक होती है। शिक्षा का लक्ष्य मानव को उसे अज्ञान से मुक्त कराना है तथा प्रकाश की ओर ले जाकर सत्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। "आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया ही शिक्षा है। अतः शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक है।''

भारत जैसे विकासशील एवं गौरवशाली संस्कृति, स्वाभिमान एवं स्वर्णिम अतीत से युक्त देश रहा तथा अपनी प्राचीनतम एवं श्रेष्ठ संस्कृति का ऋणी हैं। जिसमें ''सत्यमेव जयते" की परम्परा को अपनाया परन्तु सत्य को जानने का प्रयास लगातार करता रहा स्वतंत्र भारत में महात्मा गाँधी जी का भी ऋणी है। देश में गाँधी जी का नाम आदर सम्मान के साथ लिया जाता है। समस्या के समाधान के लिए भी विदेशी ज्ञान विज्ञान का आश्रय लेते हैं।

शिक्षा में भी यही सब घटित हो रहा है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों (वेद, पुराण, उपनिषद् श्रीमद्भगवद्गीता, मानस, भागवत आदि) में अनेक उच्च स्तरीय शैक्षिक सिद्धान्त विद्यमान है, किन्तु फिर भी हम पाश्चात्य शैक्षिक सिद्धान्तों को अपनाने की चेष्टा करते हैं।

गीता में सर्व विदित है कि ईश्वर भक्तों की भूमि, कर्मयोगियों की कर्मभूमि, ज्ञानियों की ज्ञान भूमि, साहित्यिकों की रसिक भूमि, सामाजिकों की वर्णाश्रय भूमि, माताओं की हृदय भूमि, शिष्यों की गुरुभूमि, वैज्ञानिकों की कौतुक भूमि, आरोग्य की आरोग्योपाय भूमि, उद्विग्न की उद्वेगनाश भूमि, युयुत्सुओं की रागद्वेषहित्य भूमि, सृष्टिवादियों की तत्वान्येषा भूमि, मनोवैज्ञानिकों की चिकित्सामृमि, शरणागतों की शरणागति भूमि, और दार्शनिकों की चिन्तन भूमि, सब प्रकार सबकी जिज्ञासाओं को शान्त करने वाला ग्रन्थराज श्रीमदभगवद्गीता है।'' प्रसिद्धं हि गीताशास्त्रं समस्तवेदार्थ सारसंग्रहभूतं युर्विश्रेयार्थम्।।

इसी सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता में निहित निर्देशन परामर्श के शाश्वत मूल्यों की आवश्यकता वर्तमान जीवन के हर क्षेत्र में परिलक्षित होती है क्योंकि व्यक्ति का जीवन इतना जटिल व संघर्षमय है कि हम मनोवैज्ञानिक तनाव में जीवन व्यतीत कर रहें हैं। इसलिए प्रारम्भ से लेकर अन्त तक हमे किसी न किसी रूप में निर्देशन व परामर्श की आवश्यकता पड़ती है। यदि निर्देशन परामर्श के शाश्वत मूल्यों की सम्पूर्ण प्रक्रिया भारतीय परिस्थितियों व सामाजिक वातावरण के अनुरूप होगी, तो उससे हम अधिक लाभान्वित होगें। यह तभी सम्भव है जब गीता के शाश्वत मूल्यों का हम निर्देशन व परामर्श प्रक्रिया को प्राचीन ग्रन्थों द्वारा निर्देशित विधि से करें।

निर्देशन व परामर्श का वर्णन जितना श्रीमद्भगवद्गीता में दृष्टिगोचर होता है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि परामर्श व निर्देशन के शाश्वत मूल्यों कों सम्मिलित किया जाय।

गीता ब्रह्मविद्यान्तर्गत योग शास्त्र है। इसमें नित्य शुद्ध युक्त आत्मा के वर्णन के साथ श्री कृष्ण ने स्थित पक्ष का स्वरूप निरूपण किया है। गीता एक ऐसा दर्शन है। जिसमे शाश्वत मूल्यों की मीमांसा का वर्णन है। जो बिना किसी कठिन क्रिया और साधना के ग्रहस्थ धर्म में रहकर भी सामान्य रीति से दैनिक कृत्यों करते हुए दर्शन के प्रयोजनकमूलक पुरूषार्थ को सुलभ कराता है। साथ ही मूल्यों के लौकिक व्यवहार का भी मार्गदर्शन कराता है। जबकि वेद, उपनिषद, न्याय वैशेषिकादि के

पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ केवल विद्वानों के चर्चित चवर्ण के लिए हैं।

श्रीमदभगवद्गीता एक ऐसा ग्रन्थ है जो कर्म को महत्वपूर्ण मान्यता है। महाभारत के सामयिक विविध पक्षों का चित्रण अधिक मिलता है। उदाहरण हेतु दूरदर्शन पर महाभारत सीरियल देखा तो प्रत्येक व्यक्ति को विचार करना पडा कि महाभारत के भीष्मपर्व को समझा जाये। श्री कृष्ण के उपदेश सुनकर ऐसा लगा जीवन का सिर्फ उददेश्य मुक्ति का मार्ग है। मात्र महाभारत ही नहीं अपितु रामायण, मनुस्मृति भागवत, वेद, उपनिषद्, साहित्य आदि सभी ग्रन्थों में निर्देशन–परामर्श की अवधारणा का अंश मिलता है।

श्री मद्भगवद्गीता एक ऐसा व्यावहारिक राजपथ है जिस पर आरूढ़ होकर सामान्य जन निरन्तर ऊपर उठते हुए, अध्यात्म के शिखर तक सहज रूप से पहुँच जाते है। कर्म की ऊर्जा, भक्ति की सरसता और ज्ञान की सात्विक स्थिरता उसमें एक बिन्दु पर स्थित है। इसीलिए गीता को विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यवहार शास्त्र कहा गया है। मनुष्य–हृदय में इस संघर्ष के उपस्थित होने पर मनुष्य जिस प्रकार अपना रथ सुनिश्चित करे, यही है गीता का पक्ष–प्रश्न जिज्ञासा मानव को उपलब्ध ज्ञान से आगे की दिशाओं की ओर अग्रसर करा सकेगी।

श्रीमद्भवद्गीता में, अर्जुन मन का और श्री कृष्ण सात्विक बुद्धि का प्रतीक है। यदि मन, सात्विक एवं परिनिष्ठित बुद्धि अर्थात विवेक के निर्देशन में अपना कर्त्तव्य कर्म अहंकार और कामना को त्यागकर (निष्काम होकर) करे तो मन का सारा संघर्ष और द्वन्द्व समाप्त होकर परम शान्ति प्राप्त की जा सकती है।

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों (विशेषत गीता) में परामर्श निर्देशन व शिक्षण के स्वरूप का पठन करने के पश्चात् जब पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली को पढ़ा गया तो मन में यह विचार स्वतः ही उत्पन्न हुआ कि यही परामर्श निर्देशन व शिक्षण की प्रक्रिया तो इन प्राचीन ग्रन्थों में पहले से ही विद्यमान है तो ऐसी स्थिति में हमारे वातावरण, हमारी परिस्थितियों में उत्पन्न, परामर्श, निर्देशन व शिक्षण की विधियों ठीक रहेगी, न कि पाश्चात्य परिस्थितियों में उत्पन्न विधियों तथा शाश्वत् मूल्य। इस दृष्टि से देखा जाये तो श्री भगवद्गीता तो निर्देशन व परामर्श का एक अथाह कोष है। इसमें एक कुशल परामर्शदाता व निर्देशक की भाँति श्री कृष्ण ने अर्जुन को निर्देशन व परामर्श के साथ सम्पूर्ण जीवन की वास्तविकता सिखा दी अर्थात निष्काम कर्म करने पर बल दिया। वैसे भी जब कोई व्यक्ति मानसिक या सांवेगिक रूप से व्यथित होता है। तब उसे गीता ही पढ़ने को दी जाती हैं ताकि उसे पढ़कर उसका चित्त शान्त हो सके व कोई निर्णय लेने में सक्षम हो सके।

श्रीमद्भगवद्गीता 18 अध्याय है, स्पष्ट है कि भगवद्गीता में निहित अधिविद्या और नीतिशास्त्र, हृदय विद्या और योगशास्त्र वास्तविकता (ब्रह्म) के साथ संयोग की कला दोनो ही है। आत्मा के सत्यों को केवल वे लोग ही पूरी तरह समझ सकते है। जो कठोर अनुशासन द्वारा उन्हें ग्रहण करने के लिए अपने आपको तैयार करते है। आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के विक्षेपों से रहित करना होगा और हृदय को सब प्रकार की चेष्टता से सम्बन्ध करना होगा। गीता में वैयक्तिक परमात्मा के रूप में भगवान पर बल दिया गया है। जो अपनी प्रकृति में ज्ञान अनुभव गम्य संसार का सृजन करता है। वह प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है। गीता में उपदेश (परामर्श) देने वाले कृष्ण को विष्णु के साथ जो कि सूर्य का प्राचीन देवता है और नारायण के साथ जो ब्रह्माण्डीय स्वरूप वाला प्राचीन देवता है और देवताओं और मनुष्यों का लक्ष्य या विश्राम– स्थान है, एकरूप कर दिया गया है।

प्रस्तुत आलेख के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शाश्वत मूल्य जिनका निर्देशन, परामर्श व शिक्षण से है समझने का प्रयास किया गया हैं।

अध्ययन का केन्द्र मात्र श्रीमद्भगवद्गीता को ही बनाया गया है ताकि इसमें विद्यमान निर्देशन, परामर्श व शिक्षण की विधियों को खोजा जा सके तथा ये ज्ञात किया जा सके कि श्रीमद्भगवद्गीता में शाश्वत मूल्यों में निर्देशन परामर्श व शिक्षण की क्या विधियों है व क्या उसे हम आज भी परिस्थितयों में लागू कर सकते है ।

श्रीमद्भगवद्गीता को स्रोत परम्परा का ग्रन्थ माना है। वेदों का सार उपनिषद है और गीता को समस्त वेदार्थ सार संग्रह कहा जाता है। इससे तात्पर्य है कि चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद का सार श्रीमद्भगवद्गीता में निहित है। वैदिक परम्परा श्रीमद्भगवद्गीता में सुरक्षित है। यह केवल गीता तक ही सीमित रहेगा। गीता में भी केवल निर्देशन, परामर्श, शाश्वत मूल्यों की शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित तथ्यों का ही अध्ययन किया जायेगा। विशेष रूप से उन्हीं टीकाओं की व्याख्या व विश्लेषण होगा, जिनमें श्रीमद्भगवद्गीता में शाश्वत शैक्षिक मूल्यों की निर्देशन एवं परामर्श के सन्दर्भ में मीमांसा से संबंधित तथ्यों विधियों व सिद्धान्तों का निरूपण हुआ है।

श्रीमद्भगवद्गीता महाभारत का ही अंश है। यह महाभारत के भीष्म पर्व के तेइसवें अध्याय से बयालीस वे अध्याय पर्यन्त अठारह अध्यायों का महनीय भाग है। इसमें 700 श्लोकों का वर्णन है।

महाभारत में संभावित विनाश की आशंका से विषण अर्जुन के युद्ध से विरक्त होने की इच्छा को दूर कर उसे कर्म मार्ग में प्रवृत्त करने के उद्देश्य से श्री कृष्ण ने जो उपदेश किया वहीं गीता का प्रतिपाद्य विषय है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय विचारधारा को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला ग्रन्थ है। यह सर्व वेदमयी है, उपनिषदों के मूलभूत तत्वों को गूँथकर उन्हें एक नये ही रूप में प्रस्तुत करती है। गीता मानवमात्र के कल्याण के लिए श्रेष्ठ ग्रन्थ है। मानव–जीवन की ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समुचित समाधान (परामर्श) गीता में न सुझाया गया हो। संसार के घनघोर, विपत्ति, संकट, क्षोम, भय और निराशा आदि का समाधान गीता में निहित है।

गीता "सर्वभूत हितोरता" अर्थात् प्राणि मात्र के कल्याण का उद्घोष करती है। गीता न केवल आध्यात्मिक साधकों का मार्गदर्शन करती है, बल्कि इस लोक में उत्तम जीवन जीने तथा सुख और शान्ति प्राप्त करने का मार्ग भी सुलझाती है।

परिवर्तनशील संसार में परमात्मा की दिव्य शक्ति सदैव प्रत्येक परिस्थिति में मनुष्य का सच्चा सहारा है। गीता में शाश्वत मूल्यों

की विशेषता है। यह प्रमुख दर्शन होते हुए भी काव्यात्मक है। गीता मात्र तत्व ज्ञान नहीं बल्कि व्यावहारिक दर्शन भी है।

गीता मानवता का संगीत है, श्री कृष्ण की वंशी ऐसे दिव्य संगीत का प्रतीक है, जो शिष्य अर्जुन को परमप्रिय है, अर्जुन पूर्णतया पहुँचने में प्रयत्नशील आत्मा का प्रतिनिधि है। गीता की वाणी इन्द्रियों, मन और बुद्धि को नियन्त्रण में रखकर उन्हें सबल बनाने की विधि बताती है। गीता के शाश्वत मूल्यों ने अनेक भाषाओं के माध्यम से यात्रा करके विश्व के विद्वानों को प्रभावित किया है। गीता का प्रभाव बौद्धों के महायान ग्रन्थों में भी झलकता है। प्रकृति भी ईश्वर की एक शक्ति है, जिसके विकास के माध्यम से वह अपने को प्रकट करता है।

श्रीभगवद्गीता दर्शन की दृष्टि से अमूल्य ग्रन्थ है। क्योंकि इसे सभी प्रचलित दार्शनिक मान्यताओं एवं सिद्धांतों का समाहार मिलता है। भारतीय शिक्षा दर्शन भी समस्त सार गीता में निहित है। गीता में शिक्षा के दर्शन का क्षेत्र सार्वभौमिक है। यह प्रचलित हिन्दू धर्म का दार्शनिक आधार है। इसमें प्रत्येक मनुष्य के लिए उसका निर्दिष्ट विद्यमान है।

भारतीय दर्शन में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है।

1. निवृत्ति मार्ग
2. प्रवृत्ति मार्ग

शिक्षा की दृष्टि से प्रवृत्ति मार्ग का महत्व अधिक है। श्रीभगवद्गीता में भी प्रवृत्तिमार्ग की विशेष रूप से व्याख्या की गयी है। अतः शिक्षा देने के लिए रणभूमि का चयन किया गया जहाँ प्रवृत्ति की प्रधानता है।

गीता दो प्रकार के ज्ञान का प्रतिपादन करती है–एक जो बुद्धि के द्वारा बाह्य जगत के अस्तित्व को समझाने का प्रयत्न करता है और दूसरा वह जो अन्तर्दृष्टि के द्वारा इन 'घटनाओं की श्रृंखला की पृष्ठभूमि में जो परम तत्व है उसे ग्रहण करता है। शिक्षा के वैयक्तिक एवं सामाजिक उद्देश्यों का सुदर विवेचन गीता में मिलता है।

श्री भगवद्गीता के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य उपबोध्य को केवल सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करना ही सिखाना नहीं है, अपितु अन्तर्रात्मा की आवाज सुनने समझने एवं अनुसरण करने की योग्यता प्रदान करना भी है।

- श्रीमद्भगवद्गीता व्यक्तित्व को सर्वांग सुन्दर बनाकर जीवन में सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् का बोध एवं समावेश करा देती है। श्रीमद्भगवद्गीता भगवान श्री कृष्ण की वाङ्मयी मूर्ति है जो सब प्रकार से कल्याणकारी है। सर्वप्रथम शिक्षा को एक प्रक्रिया माना गया जिसमें जगदगुरु श्रीकृष्ण ने अपने शिष्य अर्जुन की आन्तरिक शक्तियों का विकास किया।
- आधुनिक शिक्षण पद्धति के समान ही गीता में भी शिक्षण पद्धतियाँ, व्याख्यान, उपदेशात्मक, कर्मप्रधान्य आदि विद्यमान हैं।
- गीता में शिक्षण विधियों तीन प्रकार की है। ज्ञानयोग विधि, कर्मयोग विधि, भक्तियोग विधि। गीता में शिक्षण को विस्तृत अर्थ में लिया गया।
- गीता में जितना भी शिक्षण श्रीकृष्ण के माध्यम से हुआ वह उद्देश्यपूर्ण था क्योंकि श्रीकृष्ण का मुख्य उद्देश्य अपने शिष्य का कर्तव्य पथ पर अग्रसर करना था।
- गीता भारतीय विचारधारा को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला ग्रन्थ है। शिक्षा दर्शन की दृष्टि से श्रीमद्भगवद्गीता अमूल्य निधि है क्योंकि इसमें सभी प्रचलित दार्शनिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों का समाहार मिलता है।
- भारतीय शिक्षा दर्शन का समस्त सार गीता में विद्यमान है। गीता के शिक्षा दर्शन का क्षेत्र सार्वभौमिक है। शिक्षा के उददेश्यों, आदर्शों एवं मूल्यों का अत्यन्त विषद तथा सुंदर विवेचन गीता में किया गया है। गीता में शिक्षा जीवन भर चलने वाली उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- गीता का शिक्षा दर्शन किसी विशेष काल के लिए नहीं है अपितु यह तो सर्वकालिक अथवा सनातन है। जब–जब समाज में विश्रृंखला उत्पन्न होती है तब तक समाज को उन्नत करने के लिए परमात्मा को किसी शिक्षक के रूप में अवतार धारण करना पड़ता है।
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में श्रीमद्भगवद्गीता बहुत महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है क्योंकि इसमें सिद्धान्तों की अपेक्षा व्यवहारिकता अधिक है जबकि वर्तमान शिक्षण पद्धति मे सिद्धान्तों की प्रमुखता है।
- आज की शिक्षण व्यवस्था में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु का निर्माण छात्रों के मानसिक स्तरानुसार नहीं होता है, न ही उनकी योग्यता, अभिरूचि आदि के अनुसार हम शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाते हैं। यही बात छात्र अध्यापकों के पाठ्यक्रम में भी लागू होती हैं वो शिक्षण–प्रशिक्षण के अन्तर्गत जो सीखते हैं व्यवहार में उसका प्रयोग नहीं कर पाते हैं। कारण शैक्षिक परिवेश तो भारतीय परिस्थितिनुसार होता है और प्रयोग करते हैं हम पाश्चात्य शिक्षण विधियों, और दोनों में ही सामन्जस्य न बैठा पा सकने के कारण उस शिक्षण का उतना प्रभाव नहीं दिखाई देता जितना कि होना चाहिए।
- आवश्यकता है कि हमें अपने प्राचीन ग्रन्थों में, विशेष रूप से श्रीमद्भगवद्गीता में विद्यमान निर्देशन, परामर्श व शिक्षण की विधियों को खोजकर अपनाएं तो वह ज्यादा प्रभावशाली रहेगी।
- गीता में विद्यमान निर्देशन परामर्श व शिक्षण विधियाँ भी वर्तमान शिक्षा के सभी उद्देश्यों को पूरा करते हैं तो अपने वातावरण में उत्पन्न उन विधियों, प्रविधियों को और अधिक विकसित कर अपनाना ही श्रेष्ठ होगा।
- यह कहा जा सकता है कि श्रीमद्भगवद्गीता से दार्शनिक चिन्तन और व्यापक जीवन अनुभव की जो विपुल सम्पदा हमको उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई है, श्रीमद्भगवद्गीता इस सम्पदा का जगमगाता हुआ दीप है जो हमारे वाह्य जगत को और अन्तःकरण को भी आलोकित करता है।

निष्कर्ष : इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षक छात्रों, अभिभावकों तथा समस्त समाज को श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शाश्वत मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए कि

- गुरू का प्रथम दायित्व होता है कि वह चिकित्सक की भाँति शिष्य में आशा और उत्साह का संचार करें।
- सच्चा शिक्षक वही है जो छात्र को असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।
- शिक्षकों को चाहिए कि वो छात्रों के भविष्य निर्माण में अपनी भूमिका महत्वपूर्ण समझी।
- शिक्षकों को चाहिए कि वह अपने छात्रों की समस्त शंकाओं का समाधान करें।
- शिक्षक स्वयं नये–नये प्रयोग करके अपना ज्ञानवर्धन करते रहे।
- शिक्षक को स्वाध्याय करते रहना चाहिए।
- शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को उनके कर्त्तव्य, व्यक्तित्व एवं उनकी अन्तर्निहित शक्तियों की पहचान कराये।
- माता–पिता बालक के प्रथम गुरू होते हैं अर्थात् उन्हें चाहिए कि ये बालकों में उच्च गुणों का समावेश करें।
- बालकों को आदर्श व्यवहार करना चाहिए।
- बालक के शारीरिक एवं मानसिक विकास का ध्यान रखे एवं उसकी उचित देखभाल करें।
- माता–पिता बालकों को स्कूल भेजे एवं समय–समय पर उनके कक्षाध्यापकों से मिलें एवं उनके बारे में पूछे कि वो पढ़ाई एवं व्यवहार में कैसे हैं।
- बालकों में उचित मूल्यों का विकास एवं उनकी आकांक्षाओं का मार्गदर्शन करें।
- विद्यार्थी कर्मशील बने एवं जीवन पथ पर निरन्तर आगे बढ़कर शाश्वत मूल्यों को समझे ।
- विद्यार्थियों का चरित्र ऐसी धरोहर है विद्यार्थी के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है।
- विद्यार्थी सादा जीवन एवं उच्च विचार के पथ पर अग्रसर होकर अपने आपको समाज एवं देश को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं।
- एकता, सदाचार जैसे सनातन गुणों को व्यवहार में लायें।
- श्रेष्ठ पुरुषों के पास जाकर गूढ़ तत्वों को समझाने का प्रयास करतें रहें ।
- विद्यार्थियों को चाहिए कि वो अपने आपको आत्मनिर्भर बनाये एवं अपना व समस्त जगत का कल्याण करें।

हम यह अपेक्षा करते हैं कि श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शाश्वत मूल्यों से समस्त समाज अभिप्रेरित होगा और पुरातन एवं नवीन धारा के साथ मूल्यों का समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जा सकेगा।

सन्दर्भ सूची :

1. पाठक, डॉ. जगन्नाथ, 2000 ई., आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, उ.प्र. संस्कृत संस्थान प्रकाशन, लखनऊ।
2. द्विवेदी, डॉ. कपिल देव, 2004 ई., संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा संस्कृत संस्थान प्रकाशन, वाराणसी।
3. उपाध्याय, डॉ. बलदेव, 1958 ई., भारतीय संस्कृत साहित्य का इतिहास, काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी।
4. तोमर, लज्जाराम, शैक्षिक चिन्तन, 2019, विद्याभारती संस्कृति शिक्षा संस्थान, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (हिन्दी संस्करण), भारत सरकार, नई दिल्ली।
7. भारतीय उपनिषद, चौखम्बा संस्कृत संस्थान प्रकाशन, वाराणसी।
8. श्रीमद्भगवद्गीता, चौखम्बा संस्कृत संस्थान प्रकाशन, वाराणसी।
9. श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर।